जयन्त-माणिक के जासूसी कारनामे

शनि-मंगल का रहस्य

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक
जयदीप शेखर

Image by Wiroj Sidhisoradej on Freepik

शनि मंगल का रहस्य

जयन्त-माणिक श्रृँखला की बँगला जासूसी कहानी
'शनि मंगलेर रहस्य' का हिन्दी अनुवाद

लेखक
हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक
जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit:
wat-chaiwatthanaram
Image by Wiroj Sidhisoradej on Freepik.

-: Hindi eBook :-

SHANI MANGAL KA RAHASYA
(Mystery of Saturday & Tuesday)
Hindi translation of the Bengali detective story 'Shani Mangaler Rsahasya' from the 'Jayant-Manik' series.
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright: © 2023: Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (Sahibganj), Jharkhand- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 70.00
***

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

शनि मंगल का रहस्य 6
फिर वही त्रिमूर्ती 6
शनि-मंगलवार का काण्ड 9
रतनपुर की दस्यु-काली 15
सुन्दरबाबू पर आफत 30
शनिवार की रात 34
लहुलुहान जयन्त की कहानी 40
मंगलवार की रात 48
'सुम्पिटन' 56
अन्तिम दृश्य 62
टिप्पणियाँ 72

शनि मंगल का रहस्य

फिर वही त्रिमूर्ती

जोर-जोर से कड़े बजाने की आवाज और इसी के साथ ऊँचे स्वर में पुकार:

"जयन्त..., जयन्त..., ओ भाई जयन्त! अरे भाई नीन्द टूटी या नहीं?"

दरवाजा खुला। जयन्त के नौकर मधु का आविर्भाव।

"यह रहा मधु। तुम्हारे मालिक क्या कर रहे हैं भाई?"

"माणिकबाबू के साथ चाय पी रहे हैं।"

"अच्छा! इतनी जल्दी चाय की महफिल सज भी गयी? हुम्म!"

डिटेक्टिव-इंस्पेक्टर सुन्दरबाबू बड़े उत्साहित होकर सामने से मधु को हटाकर जल्दीबाजी में घर में प्रवेश कर गये– क्योंकि वे जानते थे कि इस घर में प्रभाती चाय की महफिल किसी समारोह से कम नहीं होती! चाय के नाम से ही उनके पेट के चूहों में हलचल मच गयी थी।

महफिल मे आते ही सुन्दरबाबू ने अपने प्रसिद्ध 'हुम्म' तकिया-कलाम का जोर से उच्चारण किया।

जयन्त बोला, "अरे-रे, ये तो सुन्दरबाबू हैं! आईए, आईए।"

"तुम लोगों का चाय-नाश्ता सम्पन्न हो गया लगता है।" सुन्दरबाबू के स्वर में निराशा की झलक थी।

जयन्त बोला, "रवीन्द्रनाथ के शब्दों को थोड़ा बदलकर मैं कहना चाहूँगा–

'ऊँहू, शेष करना क्या उचित है?
तेल चुकने से पहले ही मैं
बुझा देता हूँ दीपक!'"

सुन्दरबाबू भौंहे सिकोड़कर बोले, "मैं काव्य-वाव्य नहीं समझता। इसका माने क्या हुआ– सो बताओ।"

"इसका माने यह हुआ कि तेल जब समाप्त नहीं हुआ है, तो दीपक फिर जल सकता है, अर्थात् चाय फिर आ सकती है!"

“चाय फिर आ सकती है? साधू-साधू!”

माणिक बोला, “लेकिन सुन्दरबाबू, आज की तरल चाय के साथ ठोस किसी आहार की फर्माइश नहीं कीजिएगा।”

“क्यों? दो-चार आमलेट भी नहीं नसीब होंगे?”

“मिल सकते हैं, लेकिन खराब अण्डों के आमलेट खाने पड़ेंगे!”

“खराब अण्डे बोले तो? सड़े हुए?”

“यही समझिए। हमारे अण्डे इस बार खराब निकले हैं।”

“लेकिन तुम्हारी प्लेटों में तो देख रहा हूँ कि अभी भी दो-एक टुकड़े आमलेट विराजमान हैं!”

“हमने खराब अण्डों के आमलेट खाये हैं।”

“धत्त, ऐसा भी हो सकता है भला?”

“क्यों नहीं हो सकता? बाजार में घटिया नाश्ता दूकानों के मालिक अण्डे खराब हो जाने पर फेंक देते हैं क्या? ग्राहकों को उन्हीं अण्डों के आमलेट खिलाकर वे पैसे वसूलते हैं। खराब अण्डों के आमलेट गर्मा-गर्म खाने पर पता भी नहीं चलता है न!”

“लेकिन तबियत तो खराब हो सकती है?”

“सो तो है। क्या पता– कॉलेरा ही हो जाय!”

“बाबा रे, यह जानते हुए भी तुम लोगों ने खराब अण्डों के आमलेट खाये?”

“खाये हैं। सुन्दरबाबू, जीभ जो न करवाये!”

“आग लगे ऐसी जीभ को! मैं आज आमलेट खाना नहीं चाहता।”

जयन्त ने हाँक लगायी, “अरे मधु, सुन्दरबाबू के लिए– ”

जयन्त की बात पूरी होने से पहले ही ट्रे हाथों में लिये मुस्कुराते हुए मधु ने प्रवेश कर कहा, “मुझे बुला क्यों रहे हैं बाबू? सुन्दरबाबू को देखते ही मैंने नाश्ता तैयार कर लिया है।”

“क्या तैयार किये हो? अरे बाप, आमलेट?”

“जी हँ, आप आमलेट खाना पसन्द करते हैं, इसलिए– ”

सुन्दरबाबू उसे रोककर सिर एवं हाथ हिलाते हुए बोले, “नहीं-नहीं, मुझे सड़े हुए अण्डों के आमलेट पसन्द नहीं! भले ये जयन्त और माणिक को ही दे दो।”

माणिक खिलखिलाकर हँसते हुए बोला, “सुन्दरबाबू, आमलेट नहीं खाने से आप ठगे जायेंगे!”

“हुम्म, ठगा जाऊँगा, तो ठगा जाऊँगा। सड़े अण्डों के आमलेट खाकर मैं बूँट लादने नहीं जाना चाहता।”

“कैसे जाना कि अण्डे सड़े हुए हैं?”

“तुम्हीं ने तो कहा प्यारे।”

“मैं तो आपके साथ थोड़ी मसखरी कर रहा था।”

“मसखरी? मेरे साथ मसखरी कर रहे थे? छूट पाकर तुम तो सिर पर सवार होते जा रहे हो! लगता है, तुम्हारे साथ मुझे मल्लयुद्ध करना होगा!”

माणिक अपनी दोनों जाँघों पर ताल ठोंकते हुए बोला, “ठीक है, आज ही हो जाय दो-दो हाथ?”

“हटो मवाली कहीं के! मैं छूछूँदर मारकर हाथ नहीं घिनाना चाहता!”

“ठीक कहा, इतनी देर के बाद समझदारों-जैसी एक बात कही आपने। इस वक्त छूछूँदर मारकर हाथ घिनाना भी नहीं चाहिए, क्योंकि इसी हाथ से अभी आपको आमलेट भक्षण करना होगा!”

“माणिक, तुम्हारी सूरत देखकर मुझे बुखार आ जाता है! जयन्त, तुम्हारे इस दोस्त के चलते मुझे इस घर में आना बन्द करना होगा– लगता है।”

जयन्त बोला, “माणिक, तुम हमेशा हाथ धोकर सुन्दरबाबू के पीछे क्यों पड़े रहते हो– बताओ तो?”

माणिक बोला, “उनको चाहता हूँ न– इसीलिए।”

सुन्दरबाबू बोले, “रहने दो, रहने दो! तुम्हारी चाहत पाने मैं यहाँ नहीं आया हूँ। मैं आया हूँ, जयन्त से एक जरूरी परामर्श करने।”

“क्या परामर्श सुन्दरबाबू?” जयन्त ने पूछा।

“बताता हूँ भाई, बताता हूँ। पहले गुस्से पर जरा काबू पा लूँ। माणिक के चलते लगता है, मेरा ब्लड-प्रेशर बढ़ जायेगा।”

चाय-पर्व समाप्त हुआ। एक गद्देदार आराम-आसन पर जमकर बैठने तथा परितृप्त उदर के आनन्द को एकमात्र शब्द 'हुम्म' से अभिव्यक्त करने के बाद सुन्दरबाबू बोले, "बड़े चक्कर में पड़ गया हूँ भैया!"

जयन्त बोला, "सो कैसे?"

"बिलकुल नये किस्म का मामला है। मामले का सुराग समुद्र की अतल गहराईयों में डूब गया है। गोताखोर बनकर उस सुराग को खोज लाने की जिम्मेवारी डाली गयी है इसी अभागे के सिर पर!"

"क्या मामला है?"

"हत्या का। एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन हत्याएं!"

"घटनाक्षेत्र?"

"रतनपुर, चौबीस-परगना का एक बड़ा गाँव।"

"आप तो कोलकाता पुलिस में काम करते हैं, इस मामले की जिम्मेवारी आपके ऊपर क्यों आयी?"

"उस इलाके की पुलिस ने यहाँ से मदद माँगी है।"

जयन्त थोड़ा उत्सुक होकर बोला, "इसका मतलब है– मामले में कुछ दम है।"

"दम न खाक है! मैं तो सिर्फ धुआँ देख रहा हूँ, सिर्फ धुआँ।"

"धुएँ के नीचे ही आग होती है। मामला खोलकर बताईए जरा। एकदम शुरू से ही शुरू कीजिए।"

सुन्दरबाबू ने मामले के बारे में बताना शुरू किया:

"सुनो फिर। महेन्द्रनाथ घटक रतनपुर गाँव के एक बड़े गृहस्थ हैं। अभी उनकी उम्र पचास के करीब है। शुरुआती जीवन में किसी राज-'स्टेट' में मैनेजर के पद पर रहकर कुछ रुपये जोड़े थे उन्होंने। अभी वह नौकरी छोड़कर अपने गाँव में रहने लगे हैं। जितने रुपये जोड़े हैं उन्होंने, उसके सूद की महिमा से इस जीवन में कुछ सोचने की उन्हें जरुरत नहीं है। यहाँ तक कि अपनी मोटर के बिना वे सड़क पर एक कदम नहीं चलते हैं। घर में अक्सर उत्सव आदि का समारोह चलता है।

केवल गाँव के गणमान्य ही नहीं, कोलकाता से भी बहुत सारे नामी-गिरामी दोस्त इन उत्सवों में शामिल होने आते हैं।

"कुछ दिनों पहले ऐसा ही एक आमंत्रण पाकर कोलकाता से महेन्द्रबाबू के एक ममेरे भाई वहाँ गये थे, उनका नाम सुरेन्द्रनाथ था। वे भी धनी-मानी व्यक्ति थे।

"उस दिन शनिवार था। शाम के समय बैठकखाने में बैठकर महेन्द्रबाबू, सुरेन्द्रबाबू, रतनपुर थाने के दारोगा कैलाशबाबू तथा कुछ अन्य व्यक्ति गपशप कर रहे थे। किसी बात के प्रसंग में महेन्द्रबाबू बोले, 'हमारे गाँव के पास ही में एक दस्यु-काली मन्दिर है। मन्दिर बहुत पुराना है। किसी जमाने में वहाँ प्रत्येक शनि एवं मंगलवार को नरबलि दी जाती थी। आजकल देवी के वे दस्यु-भक्त नहीं रहे, प्रति शनि और मंगलवार को नरबलि भी अब नहीं दी जाती; यहाँ तक कि माँ की नित्य पूजा तक बन्द हो गयी है। मन्दिर की हालत भी बहुत बुरी है, किसी भी समय देवी के सिर पर मन्दिर की छत भड़भड़ाकर गिर सकती है, लेकिन इस ध्वस्तप्राय मन्दिर की जीर्ण-शीर्ण देवी का नाम सुनकर इस इलाके के लोग आज भी भय से सिहर उठते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि आज भी मनुष्य का रक्त पीने के लिए प्रत्येक शनि एवं मंगलवार की रात इस दस्यु-काली की पाषाण-प्रतिमा जीवन्त हो उठती है। यही कारण है कि इन दो दिनों की रात इस इलाके का कोई भी व्यक्ति इस मन्दिर के पास से भी नहीं गुजरता। सुनने में आता है कि बहुत दिनों पहले कुछ दुःसाहसी लोग शनि-मंगलवार की रात इस किंवदन्ती की परीक्षा करने के लिए मन्दिर के पास गये थे, लेकिन वे फिर नहीं लौटे। अगले दिन की सुबह मन्दिर-परिसर में उनकी मृतदेह पायी गयी थीं।'

"महेन्द्रबाबू की बातें सुनकर कोलकाता से आये सुरेन्द्रबाबू और स्थानीय थाने के दारोगाबाबू एक साथ ठहाका मारकर हँस पड़े।

"सुरेन्द्रबाबू बोले, 'मैं ठहरा पहले नम्बर का नास्तिक, दिखाई नहीं पड़ते– इसलिए मैं भगवान को ही नहीं मानता और आप मुझे ही इस देहाती गप्प पर विश्वास करने कह रहे हैं?'

"दारोगाबाबू बोले, 'मैं ठहरा पुलिसवाला। मानव, दानव, यक्ष-रक्ष, भूत-प्रेत या तंत्र-मंत्र कुछ नहीं मानता हूँ। काली नाम की कोई देवी सचमुच है कि नहीं– यह नहीं जानता, लेकिन इतना मैं जानता और मानता हूँ कि जड़ पत्थर में कभी भी प्राण का संचार नहीं होता।'

“महेन्द्रबाबू बोले, ‘मैं किसी को कुछ विश्वास करने या मानने के लिए नहीं कह रहा, लेकिन आज ही तो शनिवार की रात है। इस गप्प की सत्यता जाँचने लायक हिम्मत मुझमें नहीं है, लेकिन आप दोनों में अगर ऐसा साहस है, तो आप दोनों अनायास ही एक साथ जाकर वह मन्दिर देखकर आ सकते हैं; लेकिन ध्यान रहे– इस मामले में मेरी कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।’

“दारोगाबाबू थोड़ा हिचक गये, बोले, ‘सारे दिन के काम के बाद अभी रात में भागा-भागी करने का उत्साह मुझमें नहीं है। गप्प सच है कि नहीं– इसकी परीक्षा दो-चार दिनों के बाद भी की जा सकती है।’

“सुरेन्द्रबाबू उसी समय खड़े होकर बोले, ‘कल मुझे कोलकाता लौटना ही होगा, अतएव आज ही मैं उस मन्दिर को देख आना चाहूँगा।’

“महेन्द्रबाबू बोले, ‘लेकिन सुरेन, तुम्हें अकेले जाना पड़ेगा, क्योंकि मेरे यहाँ के नौकर तक अपने मालिक के हुक्म पर उस मन्दिर की चौहद्दी में जाने के लिए राजी नहीं होंगे।’

“सुरेन्द्रबाबू बोले, ‘मैं कायर नहीं हूँ, अकेले जाने का साहस मुझमें है, लेकिन मुझे एक बन्दूक दे सकते हैं?’

“महेन्द्रबाबू आश्चर्य से बोले, ‘बन्दूक क्या करोगे?’

“हाः-हाः कर हँसते हुए सुरेन्द्रबाबू बोले, ‘पत्थर की मूर्ती अगर जिन्दा हो जाय, तो गोली चलाकर उसकी हत्या करूँगा। क्या कहते हैं दारोगाबाबू– पत्थर की मूर्ती की हत्या करना चाहूँ, तो आपकी पुलिस के कानून मुझे रोकेंगे तो नहीं?’

“दारोगाबाबू हँसकर बोले, ‘कानून की किताब में जीवन्त पाषाण-प्रतिमा का कहीं उल्लेख नहीं है।’

“महेन्द्रबाबू से एक दोनाली बन्दूक लेकर घर से निकलकर जाते-जाते सुरेन्द्रबाबू बोले, ‘आप सभी यहीं इन्तजार कीजिए। मैं घण्टे भर के अन्दर फिर सशरीर यहाँ हाजिर होकर डिनर करूँगा।’

“एक घण्टा बीता, दो घण्टे बीते, तीन घण्टे बीत गये। सुरेन्द्रबाबू नहीं लौटे। सभी भयभीत, चकित, विस्मित और चिन्तित होकर वहाँ बैठे रहे। भय ऐसा संक्रामक होता है कि वहाँ बैठे लोग उसी रात सदल-बल मन्दिर के पास जाने की व्यवस्था तक नहीं कर पाये। पूरब में भोर की लाली फूटी– सुरेन्द्रबाबू तब भी

अनुपस्थित थे। इसके बाद सूर्योदय के साथ-साथ सबके मन में फिर से साहस का संचार हुआ। महेन्द्रबाबू दल-बल लेकर निकल पड़े।

"मन्दिर तक जाने के लिए ठीक-ठाक या मुख्य रास्ता एक ही था। पीछे की तरफ से भी हालाँकि मन्दिर में आया जा सकता था, लेकिन वह रास्ता रास्ता-जैसा नहीं रह गया था– कँटीली झाड़ियों, जंगल और बाँस-झाड़ भेदकर उधर से आना पड़ता था, इसलिए दिन के समय में भी उस रास्ते पर राहगीर नहीं दिखते थे।

"सुरेन्द्रबाबू की मृतदेह मिली मन्दिर जाने के मुख्य रास्ते पर ही। उनके शरीर पर अस्त्राघात[1] का कोई चिह्न नहीं था, सिर्फ उनकी गर्दन की बाँयी तरफ सूई की नोंक-बराबर रक्त लगा हुआ था! अर्थात् शरीर पर आलपिन या सूई चुभोने से जैसा दाग बनेगा, वैसा ही निशान था; लेकिन शव के आस-पास बहुत खोज-बीन करके भी सूई-जैसी कोई चीज नहीं पायी गयी। बाद में अन्त्यपरीक्षण[2] से प्रमाणित हुआ कि सुरेन्द्रबाबू की मृत्यु जहर से ही हुई थी।

"दारोगा कैलाशबाबू पर जाँच की जिम्मेवारी आयी, लेकिन मामले को हाथ में लेने के बाद वे कुछ अनुमान नहीं लगा पाये।

"कैलाशबाबू भीतू व्यक्ति नहीं थे। उन्हें पक्का विश्वास था कि शनि-मंगलवार को किसी अलौकिक कारण से यह मन्दिर मनुष्य के लिए प्राणघातक हो जाता है– इस विचित्र किंवदन्ती के पीछे कोई सच्चाई नहीं है। यही विश्वास लेकर अगले मंगलवार की रात वे अकेले चुपके से मन्दिर की ओर चल पड़े। यही उनकी अन्तिम यात्रा बन गयी। बुधवार की सुबह उनकी भी मृतदेह मन्दिर के सामने मुख्य पथ पर ही पायी गयी। उनके बाँये हाथ पर भी सूई चुभने का निशान पाया गया, जहाँ बिन्दु भर खून जमा था और अन्त्यपरीक्षण में उनके शरीर में भी जहर पाया गया। केवल यही नहीं, जिस जगह पर सुरेन्द्रबाबू की लाश पायी गयी थी, कैलाशबाबू की लाश भी ठीक उसी स्थान पर मिली।

"इसके बाद की घटना को और भी संक्षेप में बता दूँ। दूसरी घटना के बाद वाले शनिवार को एक और पुलिसकर्मी रात में मन्दिर के पास जाँच करने गया था और वह भी ठीक इसी तरह से मारा गया। इस बार सूई चुभने का निशान उसके बाँये पैर पर था, उसकी मृत्यु का कारण भी जहर था और उसकी लाश भी ठीक उसी जगह पर मिली थी।

"अब इस मामले की जाँच की भार सौंपी गयी है तुम्हारे इस अभागे सुन्दरबाबू के कन्धों पर; लेकिन भैया, मुझे सन्देह हो रहा है कि इस भार को मैं वहन नहीं कर पाऊँगा। कैसा मामला है यह? नरहत्याकारिणी दस्यु-काली को अभियुक्त बनाकर अगर मैं जाँच आगे बढ़ाऊँ, तो मेरे नाम पर सारा देश हँसेगा नहीं?

"और फिर केवल शनिवार और मंगलवार को ही इस मन्दिर के पास जाना खतरनाक क्यों है? सुनने में आ रहा है कि तीसरी घटना की रात जो पुलिसकर्मी मन्दिर के रास्ते पर मारा गया, वह शनि-मंगलवार छोड़कर अन्यान्य दिन भी गुपचुप तरीके से मन्दिर-परिसर में जाँच करने गया था, लेकिन अन्यान्य दिनों में कोई दुर्घटना नहीं घटी थी, उसे सन्देहजनक कुछ नहीं मिला था वहाँ और वह सकुशल वापस आ गया था। अब यह क्या रहस्य है? क्या तुम्हें ऐसा नहीं लग रहा जयन्त कि यह कोई भूतिया मामला है?

"प्रत्येक हत्या के पीछे एक उद्देश्य होता है। यहाँ तक कि उद्देश्य प्रमाणित न होने पर कानून किसी हत्यारे को सजा तक नहीं दे सकता। किसी उद्देश्यहीन हत्याकाण्ड को सुलझाने के लिए दिमाग खपाना कोल्हू के बैल वाला श्रम है। यह मामला उसी श्रेणी का है।

"महेन्द्रबाबू के ममेरे भाई सुरेन्द्रबाबू की बात ले लो। वे स्थानीय व्यक्ति नहीं थे। उस गाँव के किसी भी व्यक्ति का आक्रोश उनके प्रति नहीं हो सकता। वे मात्र दो दिनों के लिए वहाँ आये थे। वे प्रथम घटना की रात अचानक उस मन्दिर में जाना चाहेंगे– यह बात भी बाहर का कोई नहीं जानता था। जो जानते थे, वे सबके-सब सारी रात महेन्द्रबाबू के बैठकखाने में ही बैठे हुए थे, फिर भी घटनास्थल पर जाकर किसी ने उनकी हत्या की और फिर, हत्या की ही क्यों? उनकी हत्या करके क्या लाभ हुआ?

"इसके बाद दो पुलिसकर्मियों की बात लो। उनकी हत्या क्यों की गयी? उन दोनों ने तो सन्देहास्पद कोई सुराग नहीं पाया था! दूसरे पुलिसकर्मी शनि-मंगल के अलावे अन्यान्य दिनों में भी घटनास्थल पर गये थे– यह मत भूलना। इस मामले में यदि किसी मनुष्य-हत्यारे का हाथ होता, तो फिर अन्यान्य दिनों में मौका पाकर भी उसने पुलिसवाले को क्यों छोड़ दिया?

"कुछ पुलिसवाले सन्देह कर रहे हैं कि किसी विषधर जीव के दंश से ही तीनों व्यक्तियों की मृत्यु हुई है, लेकिन यह तर्क गले से नीचे नहीं उतरता। यह

विषधर जीव क्या शनि-मंगलवार की रात ही एक निर्दिष्ट स्थान पर आकर प्रतीक्षा करता है? इस तर्क में कोई दम नहीं है।

"और यह सूई चुभने का मामला क्या है? कौन सूई चुभोता है? लाश के साथ या पास में सूई क्यों नहीं मिलती? एक और बात– इतने अस्त्रों के रहते सूई-जैसे अस्त्र का व्यवहार क्यों किया जा रहा है?

"बड़ा जटिल मामला है भैया, बड़ा जटिल मामला है! यह मामला हाथ आने के बाद से मुझे वही 'मानव पिशाच'[3] वाले मामले की याद आ रही है। मुझे शक है कि उसकी तरह इस मामले के साथ भी कोई भूतिया सम्बन्ध जुड़ा है! उस भयावह अपराधी नवाब और उसके गुलाम जिन्दा लाशों की बात बेशक तुम लोग भूले नहीं होगे। पहले मैं भूत-प्रेत कुछ भी नहीं मानता था, लेकिन उन मानव-पिशाचों के चंगुल में पड़कर मैं अपना वह विश्वास खो बैठा हूँ। उसके बाद से मानने लगा हूँ कि इस धरती पर अपार्थिव, अलौकिक घटनाएं घटना भी असम्भव नहीं हैं।

"तो जयन्त, माणिक, अब तुम लोगों की क्या राय है– बताओ।"

कहानी खत्म कर सुन्दरबाबू प्रश्नवाचक निगाहों से जयन्त के चेहरे की ओर देखते रहे, लेकिन जयन्त ने कोई जवाब ही नहीं दिया, गम्भीर एवं स्तब्ध होकर वह स्थिर बैठा रहा।

माणिक बोल पड़ा, "बात तो सही है सुन्दरबाबू, आपके लिए मुझे अफसोस हो रहा है।"

सुन्दरबाबू माणिक के अफसोस की परवाह करने के लिए राजी नहीं हुए। बोले, "अपना अफसोस अपने पास ही रखो प्यारे, मुझे और तंग करने मत आओ।"

माणिक कहाँ छोड़ने वाला था, बोला, "जितने भी उलझाऊ मामले आते हैं, सब आपके मत्थे मढ़ दिया जाता है! क्यों, पुलिस में क्या कोई और योग्य व्यक्ति नहीं है?"

सुन्दरबाबू थोड़े विचलित होकर बोले, "कह तो सही रहे हो! मुझे तो जैसे कचरा-पेटी बना डाला है!"

माणिक एक गहरी साँस छोड़कर बोला, "बेचारे सुन्दरबाबू! सिर पर चाँद है, ज्यादा धूप लग जाने से चटककर फट जाने की आशंका है; छोटे हाथी-जैसा थुलथुल शरीर है, दो कदम दौड़ते ही भाथी के समान हाँफने लगते हैं; बड़ी गठरी-जैसी तोन्द है, उसके लिए खुराक जुगाड़ करने में ही दिन बीत जाता है; इन सबके ऊपर यह अत्याचार!"

गुस्से से सुन्दरबाबू आग-बबूला हो उठे। आसन त्यागकर वे बोले, "जयन्त, तुम्हारे साथ परामर्श के लिए आकर मैंने गलती की है! जहाँ माणिक है, वहाँ मैं एक पल नहीं रह सकता!" कहकर सुन्दरबाबू दरवाजे की ओर अग्रसर हुए।

जयन्त बोला, "ठहरिए सुन्दरबाबू।"

"ठहरूँ? क्यों ठहरूँ? और ज्यादा अपमानित होने के लिए?"

"नहीं-नहीं, और आपको कोई अपमानित नहीं करेगा। आसन ग्रहण कीजिए। ...अब जरा बताईए, आपको मेरा केवल परामर्श चाहिए, या मेरी सहायता चाहिए?"

"तुम यदि मेरी सहायता करने के लिए राजी हो जाओ, तब तो मेरा बहुत सारा परिश्रम हल्का हो जायेगा!"

"हाँ, मैं तैयार हूँ। कब रतनपुर जा रहे हैं?"

"कल।"

"ठीक है, कल ही हम आपके संगी बनेंगे।"

"लेकिन... माणिक के न जाने से अच्छा नहीं रहता?"

"नहीं, माणिक तो मेरा दाहिना हाथ है।"

रतनपुर की दस्यु-काली

रतनपुर गाँव एक बहुत पुराना गाँव था– देखते ही यह समझते देर नहीं लगती थी। गाँव न कहकर इसे एक छोटा शहर ही कहा जा सकता था। इसके रास्तों पर छोटे एवं मँझोले आकार के पक्के मकानों की संख्या तो कम नहीं ही थी, जिसे अट्टालिका की उपमा दी जा सके– ऐसे भी कुछ मकान नजर आ रहे थे; लेकिन एक को छोड़ बाकी सभी अट्टालिकाएं बाबा आदम के जमाने की याद